eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

भारतीय संस्कृति का पर्यावरण शिक्षा में समावेशनः आधुनिक युग की आवश्यकता

डॉ० विशाल शुक्ल[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग अर्मापुर पी०जी० कॉलेज, कानपुर

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण शिक्षा का आपसी संबंध आधुनिक युग की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। इस शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि भारतीय संस्कृति किस प्रकार पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में योगदान देती है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा और सम्मान का भाव है। यह भाव पर्यावरण शिक्षा में समाहित करके हम न केवल प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं, बल्कि एक संतुलित जीवनशैली भी अपना सकते हैं। भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति जो सम्मान है, वह न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज को भी प्रेरित करता है कि वे अपने आसपास के पर्यावरण की रक्षा करें। इसके अलावा, यह पत्र यह भी बताता है कि सामुदायिक भागीदारी और पारंपरिक ज्ञान का उपयोग कैसे किया जा सकता है ताकि पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाया जा सके। भविष्य की पीढ़ियों को एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण प्रदान करने के लिए आवश्यक है कि हम भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों को अपनाएं। भारतीय संस्कृति का समावेश न केवल पर्यावरण शिक्षा को बल्कि समाज के अन्य क्षेत्रों में भी सकारात्मक बदलाव ला सकता है। आज न सिर्फ देश बल्कि अनेक अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं भी वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के ह्रास से चिंतित हैं तथा वे लगातार इस सन्दर्भ में प्रयास भी कर रहे हैं। इस प्रकार, भारतीय संस्कृति का पर्यावरण शिक्षा में समावेशन न केवल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए आवश्यक है, बल्कि यह एक संतुलित और स्वस्थ समाज की स्थापना में भी सहायक है, भारतीय सांस्कृतिक शिक्षाओं को अपनाने से न केवल पर्यावरण संरक्षण होगा, बल्कि यह एक समृद्ध और संतुलित जीवन जीने के लिए भी प्रेरित करेगा।

कुंजी शब्द– भारतीय संस्कृति, पर्यावरण शिक्षा, समावेशन।

Introduction

भारतीय संस्कृति का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। यह संस्कृति आरण्यक कहलाती है क्योंकि इसने अपना ज्ञान, विज्ञान तथा सांस्कृतिक वैभव गहन तपोवन में ही प्राप्त किया है। गुरुकुल, आश्रमों आदि में जीवन एक नवीन रूप में प्रदर्शित होता है। यह अपनी विविधता, गहराई और प्राकृतिक संतुलन के प्रति सम्मान के लिए जानी जाती है। भारतीय संस्कृति के मूल्य, मान्यताएँ और आस्थाएँ प्राकृतिक संरक्षण के सिद्धांतों से जुड़े हुए हैं। भारतीय संस्कृति में जीवन को जिन चार आश्रमों में विभाजित किया गया है, उनमें से तीन आश्रम– ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ तथा सन्यास तीनों ही वनों अर्थात् प्रकृति से अत्यधिक जुड़े हुए हैं। इसके सिवा सभी प्राकृतिक शक्तियां हमारे धर्म और संस्कृति में अत्यंत पूज्य हैं। समस्त प्रकृति की शक्तियां अद्भुत हैं तथा वेदों में इन शक्तियों का लगातार पूजन एवं आह्वान विभिन्न मन्त्रों के द्वारा हुआ है, यजुर्वेद में वर्णित शांति मन्त्र अत्यंत प्रसिद्ध है तथा यज्ञ तथा हवन में इसका प्रयोग अत्यंत आवश्यक माना गया है

'ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः

पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वं शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।'

इसमें अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधि, वनस्पति, देव, ब्रह्म तथा हर तरफ शान्ति की बात ही की गयी है। आज के भौतिकवादी युग में, जब पर्यावरण संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब भारतीय संस्कृति की शिक्षाएँ अत्यधिक प्रासंगिक हो गई हैं। यह शोध पत्र इस विषय पर ध्यान केंद्रित करता है कि भारतीय संस्कृति किस प्रकार पर्यावरण शिक्षा में समाहित की जा सकती है और यह आधुनिक युग की आवश्यकता क्यों है।

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण– भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण के कई आयाम हैं। यह संस्कृति प्राकृतिक तत्वों को देवता मानती है, जिससे समाज में प्राकृतिक संसाधनों के प्रति एक सम्मानजनक दृष्टिकोण विकसित होता है।

वेदों का योगदानः– वेदों में प्राकृतिक तत्वों का वर्णन किया गया है, जिसमें जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि आदि का विशेष महत्व है। ऋग्वेद में प्राकृतिक संसाधनों की महत्ता और उनके संरक्षण की बातें की गई हैं। उदाहरण के लिए, ऋग्वेद में कहा गया है, "पृथ्वी माता, तुम हमें शक्ति प्रदान करो"। यह वाक्य हमें यह संदेश देता है कि पृथ्वी हमारी मां के समान ही महत्व रखती है, इसका संरक्षण करना हमारी जिम्मेदारी है।

भारतीय धार्मिक मान्यताएँः– भारतीय धार्मिक मान्यताओं में पर्यावरण के प्रति सम्मान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दू धर्म में वृक्ष, नदी और पर्वत को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है। यह भावना न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान और संरक्षण की ओर भी इंगित करती है। उदाहरण के लिए, तुलसी का पौधा हिन्दू धर्म में बहुत महत्वपूर्ण है, जिसे घर में रखने से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और इसका संरक्षण करना अनिवार्य माना जाता है। इसके अतिरिक्त पीपल, बरगद आदि अनेक वृक्षों के साथ धार्मिक मान्यताएं जुड़ी हुई हैं।

विभिन्न रोगों और चिकित्सा में पेड़–पौधों और जड़ी–बूटियों का प्रयोगः– भारतीय संस्कृति में विभिन्न रोगों के उपचार हेतु अनेक पेड़–पौधों और जड़ी–बूटियों का प्रयोग आदि काल से चला आ रहा है। तुलसी, नीम, पीपल, सतावर, दुद्धी, ब्राह्मी, आंवला आदि का प्रयोग विभिन्न रोगों के उपचार हेतु घर–घर में किया जाता है।

विभिन्न मांगलिक कार्यों में प्रकृति का सानिध्यः – आम के पत्तों की बन्दनवार हो या केले के पत्तों का प्रयोग, विभिन्न पुष्पों और अन्नों का प्रयोग सभी पूजन में इनका प्रयोग भारतीय संस्कृति में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। विवाह के समय खेत पूजन हो या नदी, कुआं या जल–स्रोत की पूजा, सभी में प्रकृति और पर्यावरण के साथ हमारी आत्मीयता दिखाई पड़ती है।

जल संरक्षण का संदेशः– जल ही जीवन है यह हमारे पूर्वज भली भांति समझते थे। भूमि के साथ–साथ उन्होंने नदियों को देवी माना। उन्होंने नदियों के प्रति आदर भाव त्योहारों, लोकगीतों, पूजा द्वारा आने वाली पीढ़ियों को भी समझाया। आज भी नदी किनारे लगने वाले मेले के माध्यम से पर्व में नदी की पूजा और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

स्नान, हमारी अनूठी संस्कृति का अभिन्न अंग है। हमारी संस्कृति का सबसे बड़ा पर्व महाकुम्भ भी नदी के तटपर ही लगता है। जल संरक्षण के लिए सरोवर, पोखर, तालाब, कुंआ, नदी सभी अनिवार्य हैं। अतः उनके निर्माण तथा संरक्षण पर बल देने की बात हर रीति–रिवाज में शामिल कर संप्रेषित कर दी गई। शिशु के जन्म के बाद प्रसूता की कुंआ पुजाई होती है। इसी तरह विवाह संस्कार में कुंआ पूजा जाता है। पूर्वजों का मानना था कि जलस्रोत रहेंगे तभी जीव रहेंगे। इस जीव मंडल में चिंता मनुष्य मात्र की नहीं, सभी जलचर, पशु पक्षियों की भी है।

वसुधैवकुटुंबकम् का वास्तविक भाव:– विष्णु अवतार में मत्स्य, कूर्म, वराह आदि जीवों को आराध्य माने जाने की परंपरा है। नागपंचमी जैसा पर्व नाग परिवार के संरक्षण का अप्रतिम उदाहरण है। सर्प या नाग महादेव के श्रृंगार हैं। जहां गणपति का वाहन मूषक, कार्तिकेय का मयूर, सरस्वती का वाहन हंस, दुर्गा की सवारी सिंह, भैरों जी की सवारी श्वान के प्रतीक हों वहीं तो सच्चे अर्थों में वसुधैवकुटुंबकम् की अवधारणा पुष्ट होती है। जिस देश में मछली, नीलकंठ, नेवले का दर्शन शुभ माना जाता हो, कौवे की बोली अतिथि आगमन की सूचना मानी जाती हो, वहां की महान संस्कृति की मूल भावना पर्यावरण संरक्षण की ही तो है। आजकल समावेशी और सह अस्तित्व जीवनशैली पर दुनियाभर में बहुत बातें होती हैं। इसी की सीख देती है भारतीय संस्कृति। प्रकृति का समुचित आदर होगा तभी हम सुरक्षित हैं।

लोक–संस्कृति तथा लोकगीतों में पर्यावरण संरक्षण–

लोकगीतों में पर्यावरणबोध: हमारे अधिकांश लोकगीत पर्यावरण से गहनता से जुड़े हुए हैं– उदाहरण के लिए

इस लोक–गीत में बेटी विदा होते हुए पिता से कहती है –
'बाबा निमिया के पेड़ जिन काटियो बाबुल
निमिया पे चिरैया के बसेर
बलईया लेऊ बीरन की
बाबा सगरी चिरैया उड़ी जइहें
रहि जइहें निमिया अकेर'

नीम का वृक्ष न कटे इसकी चिंता में यह सत्य भी उपस्थित है कि वृक्ष पर्यावरण का मुख्य आधार है, वृक्ष कट गया तो पंछी कहां जाएंगे। यह है हमारे लोक जीवन की पर्यावरण के प्रति जागरूकता।

एक गीत और देखिए– विवाह का उत्सव है, बहू को नया कोहबर लिखने की शिक्षा देती गुरु सास कोहबर बनाने की विधि बताते हुए आम और केले के वृक्ष, गंगा जमुना की जलधार, कमल के फूल के साथ सूर्य और चंद्रमा सब फूलों के रंग से रंगने और लताओं से सुसज्जित करने की शिक्षा दे रही है। कोहबर की यह चौक नव वर–वधू के नव जीवन का आशीर्वाद बनेगी। अतः यहां प्रकृति के सभी तत्वों की उपस्थिति अनिवार्य है। सास इस गीत में परंपरा साधिका भी है और संस्कृति वाहिका भी है। सदियों से लोककंठों में सुरक्षित लोकगीतों ने संस्कृति की ऐसे ही रक्षा की है और उसे आगे बढ़ाने का दायित्व पूरा किया है–

'मचिया ही बइठि सासू बढ़इतिन, सुना बहुअरि अरज हमारि हो।
सुन्नर सुघर रचा बहुअरि कोहबर, बेटी क रचा बियाह हो।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

दुइ रचा द्वारे, दुइ रचा भीतर, यक कोहबर सातों माई थान हों।
चार चौखुटा कै कोहबर रचिदेउ, आरी–आरी लतर सजाई हो।
आम औ केरा क बिरबै बनाइउ बीचे बिराजै सीता–राम हो।
गंगा जमुन धारि कलसा बनाइउ, गणपति बीच बिराज हों।
पुरइन पात कंवल कै फुलवा चंदा औ सुरज उकेरि हो।
लेपन, गेरू, हरदी, फूल पात रस, रंगि रची कोहबर सजाव हो।।'

लोक चित्रों में समस्त चराचर के दर्शनः हम देखेंगे तो पाएंगे कि हमारे लोक चित्र आलेखनों में समस्त चराचर जगत को शामिल करके मनुष्य ने सबसे पहला ज्ञान यही साझा किया कि समस्त प्रकृति, वनस्पति तथा प्राणि जगत का सम्मान हो। पूजा की चौक में सूर्य और चंद्र आशीष देने सर्वोपरि विराजते हैं। उनके साथ चिरैया–शगुन, मछली–कामना, आम–सुमंगल, तुलसी–कल्याण, कुंभ–पूर्णता, हरियाली–खुशहाली, ईख–सद्भावना, गाय–देवताओं का सामूहिक स्वरूप, हाथी–ऐश्वर्य, अश्व–शक्ति, सर्प–संतति के बिंब बन दिखाई देते हैं। भारतीय संस्कृति में मान्यता है– 'माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्या।' यह विश्वास लोकाचार में भी आया है। भूमि देवता की पूजा, हर मांगलिक अवसर पर भूमि देवता का आह्वान, यह विश्व की किसी भी संस्कृति में नहीं दिखेगा।

भारतीय संस्कृति और आधुनिक विज्ञान का समन्वय – भारतीय संस्कृति और आधुनिक विज्ञान में एक मजबूत संबंध स्थापित करना आवश्यक है। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करने के लिए भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों को एकीकृत किया जा सकता है। यह समन्वय न केवल ज्ञान को बढ़ावा देगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी मददगार होगा।

सतत विकासः सतत विकास का सिद्धांत भारतीय संस्कृति में निहित है। वेदों और उपनिषदों में जो सिद्धांत दिए गए हैं, वे पर्यावरण संरक्षण और संतुलन की आवश्यकता को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, "सर्वे भवंतु सुखिनः" का अर्थ है कि सभी जीव–जंतु सुखी रहें, यह सिद्धांत हमें यह सिखाता है कि हमें अपने आस–पास के पर्यावरण का ध्यान रखना चाहिए। यदि कहा जाए कि सतत विकास का लक्ष्य ईशोपनिषद के सूत्र

'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्याम्जगत्।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

की ही नवीन व्याख्या है तो कुछ गलत नहीं होगा। यह जो कुछ भी है संसार में सब ईश्वर से ही व्याप्त है, इसका त्यागपूर्वक भोग करना अर्थात् समस्त प्राकृतिक संसाधनों का ऐसे प्रयोग करना कि उनका मूल स्वरुप न बिगड़ने पाए तथा उनको ईश्वर का उपहार मानकर ही उपयोग करने की बात कही गयी है।

तकनीकी नवाचारः तकनीकी नवाचार भी भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांतों को ध्यान में रखकर किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग भारतीय संस्कृति के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मदद कर सकता है, क्योंकि अग्नि, वायु, पृथ्वी, जल तथा आकाश इन पांच तत्वों की सहायता से ही शरीर के निर्माण की बात मानी गयी है। इसके अतिरिक्त सूर्य, जल, वायु सभी को शक्ति का प्रतीक माना गया है।

भारतीय परंपराओं में पर्यावरणीय ज्ञानः भारतीय परंपराओं में पारिस्थितिकी के प्रति एक गहरा ज्ञान है। यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होता आया है। पारंपरिक कृषि विधियाँ, जैसे "जैविक खेती", ने हमेशा से प्रकृ

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

ति के साथ सामंजस्य स्थापित किया है। उदाहरण के लिए, भारतीय किसान अपने खेतों में केवल स्थानीय बीजों का उपयोग करते हैं, जिससे जैव विविधता बनी रहती है। इसके अतिरिक्त प्रमुख भारतीय त्योहार भी खेती और फसल कटाई से सम्बंधित हैं जैसे मकर संक्रांति, बिहू, ओणम, पोंगल, लोहड़ी, बैसाख, हरियाली तीज आदि।

आधुनिक पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति भारतीय संस्कृति में पूर्व चेतनाः आधुनिक युग की अनेक पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति प्राचीन समय से ही हमारी संस्कृति जागरूक रही है, तथा इसे हमारे धर्म तथा आचरण के साथ जोड़कर इसने सदैव प्रकृति के साथ एक अद्भुत सम्बन्ध को स्थापित किया है। 'कुष्मांडा देवी' को अपनी मुस्कान द्वारा ब्रह्माण्ड की रचना का श्रेय दिया जाता है, तथा इनकी अवस्थिति उसी समताप मंडल में मानी जाती है, जहाँ 'ओजोन परत' है तथा इनको विश्व की रक्षा करने वाली शक्ति के रूप में माना जाता है। 'ओजोन परत' का महत्व हमें भलीभांति पता है। इसके अतिरिक्त वृक्षों, नदियों, जल, पर्वतों तथा विभिन्न पशु–पक्षिओं के पारिस्थितिकी में महत्व को देखते हुए इनको अलग–अलग देवताओं से जोड़कर, इन सभी को अपने धर्म और संस्कृति के साथ जोड़ा गया है।

भारतीय संस्कृति का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावः भारतीय संस्कृति का पर्यावरण संरक्षण पर प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देखा जा सकता है। विश्व स्तर पर जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और जैव विविधता की हानि जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों का प्रयोग करके, अन्य देशों को भी पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, "योग" और "आसन" जैसी प्रथाएँ न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं, बल्कि ये मानसिक स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनमें प्राकृतिक पर्यावरण का सामीप्य अत्यंत आवश्यक होता है।

भारतीय संस्कृति के मूल्यों का पर्यावरण शिक्षा में समावेशन– आज के युग में, जब औद्योगीकरण और शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है, तब पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। पर्यावरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए जागरूक करना है। भारतीय सांस्कृतिक मूल्य न सिर्फ पर्यावरण संरक्षण अपितु जैव–विविधता, पर्यावरण प्रदूषण तथा पर्यावरण संवेदीकरण की भावना का व्यापक प्रसार करने में समर्थ हैं। इनका पर्यावरण शिक्षा में समावेशन निम्न प्रकार से संभव हो सकता है–

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समावेशः आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति की मूल बातें शामिल करके हम छात्रों को एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं। जब छात्र भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों को समझते हैं, तब उन्हें अपने पर्यावरण की रक्षा करने का महत्व समझ में आता है। इस तरह पर्यावरण के प्रति मूल भारतीय भाव का संवाहन एवं संरक्षण संभव हो पायेगा।

सामुदायिक भागीदारीः पर्यावरण शिक्षा को सफल बनाने के लिए सामुदायिक भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। जब लोग भारतीय संस्कृति की शिक्षाओं को समझेंगे, तो वे अपने समुदाय में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित होंगे। यह प्रक्रिया न केवल ज्ञान का आदान–प्रदान करेगी, बल्कि सामूहिक प्रयासों से पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक होगी।

निष्कर्ष– भारतीय संस्कृति का पर्यावरण शिक्षा में समावेशन न केवल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए आवश्यक है, बल्कि यह एक संतुलित और स्वस्थ समाज की स्थापना में भी सहायक है। जब हम भारतीय

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

संस्कृति की गहराइयों में जाकर उसके सिद्धांतों को समझते हैं, तब हमें यह अहसास होता है कि यह संस्कृ ति हमें एक स्थायी और संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देती है। आज के युग की सबसे बड़ी चुनौती आध्यात्मिक पक्ष और भौतिक पक्ष का द्वंद्व है तथा भारतीय संस्कृति में सदैव ही अध्यात्मिक पक्ष को ही महत्व प्रदान किया गया है। राम, बुद्ध तथा दधीचि सभी ने त्याग का जो उच्चतम आदर्श सामने रखा है वह आज भी हमारे लिए प्रेरणा श्रोत है। रवीन्द्रनाथ टैगोर अपने निबंध 'तपोवन में शिक्षा' में कहते हैं– 'विश्व–प्रकृति के साथ योग में ही भारत ने अपने–आपको वृहत और सत्य रूप में जाना है।' आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए, हमें भारतीय संस्कृति के इस समृद्ध ज्ञान को अपनाना होगा। भारतीय संस्कृति का समावेश न केवल पर्यावरण शिक्षा को बल्कि समाज के अन्य क्षेत्रों में भी सकारात्मक बदलाव ला सकता है। इस प्रकार, यह शोध पत्र भारतीय संस्कृति और पर्यावरण शिक्षा के समावेशन की आवश्यकता को रेखांकित करता है और इसे समाज के विकास के लिए अनिवार्य बताता है। भारतीय संस्कृ ति में प्रकृति के प्रति सम्मान का यह सिद्धांत धार्मिक मान्यताओं, साहित्य, कला और संस्कृतियों के विभिन्न पहलुओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हिन्दू धर्म में वृक्ष, जल और पर्वत को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है, जो पर्यावरण के प्रति जागरूकता और संरक्षण का प्रतीक है। वेद और उपनिषद जैसे प्राचीन ग्रंथों में पर्यावरण की रक्षा करने की आवश्यकता का उल्लेख किया गया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति में न केवल आध्यात्मिकता बल्कि प्राकृतिक संतुलन का भी ध्यान रखा गया है।

आधुनिक युग में, जब औद्योगीकरण और शहरीकरण तेजी से बढ़ रहे हैं, तब पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों को शामिल करके हम छात्रों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता पैदा कर सकते हैं। पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य लोगों को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए जागरूक करना है। जब छात्र भारतीय संस्कृति की शिक्षाओं को अपनाते हैं, तो वे अपने पर्यावरण की रक्षा के प्रति जिम्मेदार बनते हैं।

सन्दर्भ सूची–

अवस्थी, मालिनी.(2022) "भारतीय संस्कृति के मूल में है पर्यावरण संरक्षण की भावना", दैनिक जागरण।
आचार्य, रामचंद्र.(2018) भारतीय संस्कृति और पर्यावरण, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
सान्याल, ऋषि.(2020) "वेदों में पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांत". विज्ञान और समाज।
शर्मा, किरण.(2021) धार्मिक मान्यताओं का पर्यावरण पर प्रभाव, शारदा कला प्रकाशन, मुंबई।
यादव, सीमा.(2019) "सामुदायिक भागीदारी और पर्यावरण शिक्षा". सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका।
ठाकुर, रवीन्द्रनाथ.(1999) रवीन्द्रनाथ का शिक्षादर्शन, अरुण प्रकाशन, दिल्ली।
दुबे, साक्षी.(2020) सतत विकास और भारतीय संस्कृति. पेंगुइन इंडिया, जयपुर।
मिश्रा, अदिति.(2023) "भारतीय संस्कृति में प्रकृति की महत्ता". संस्कृति और समाज।